इकाई 3 समाज और राजनीति : जापान

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद :

- आपको पूर्व-आधुनिक काल के जापान की संरचना और इसके मुख्य सामाजिक विभाजनों की जानकारी होगी,
- आप राजनीतिक अधिकार की प्रकृति और इस अधिकार का इस्तेमाल करने वाली राजनीतिक संस्थाओं के बारे में समझ सकेंगे,
- आपको इस समाज में स्थिरता और बदलाव के लिये काम करने वाली शक्तियों की जानकारी होगी, और
- आप इस क्षेत्र में पश्चिमी शक्तियों के आने के समय इस समाज की मजबूती और कमजोरी की समीक्षा कर पायेंगे।

3.1 प्रस्तावना

पूर्व-आधुनिक काल के जापान का इतिहास राजनीतिक स्थिरता के एक लंबे दौर का गवाह रहा। इस काल में 1603 से 1868 तक तोकुगावा परिवार के हाथ में सत्ता रही। इस दौर में जापान के विदेशों के साथ बहुत सीमित संबंध रहे, जिससे एक अनूठी जीवंत संस्कृति की रचना हुई। आर्थिक बदलाव और मुद्रा अर्थव्यवस्था ने सामाजिक संबंधों का पोषण किया और स्थापित सत्यों और मान्य सिद्धान्तों को नकारने वाले नये चिंतन के प्रति योगदान दिया। तोकुगावा काल की "महान शांति" ने आधुनिक जापानी संस्कृति को जन्म लेते देखा और इसी आधार पर आधुनिक जापान तेज़ी के साथ औद्योगीकरण और विकास कर सका। इस दौर में तनाव और कलह भी रहे, जैसे किसान विद्रोह और बाद के शहरी दंगे। इनसे इस बात का भी पता चलता है कि समाज स्थिर रहने के बजाय किस तरह बदल रहा था। आधुनिक जापान के निर्माण और विकास को समझने के लिये तोकुगावा समाज की सीमाओं और गतिशीलता दोनों को समझना आवश्यक है। इस इकाई में उस प्रक्रिया पर विचार किया जायेगा जिससे होकर तोकुगावा राजनीतिक ढांचे का सृजन और इसके समाज का निर्माण हुआ।

नक्शा-2 : जापान के पुराने प्रांत
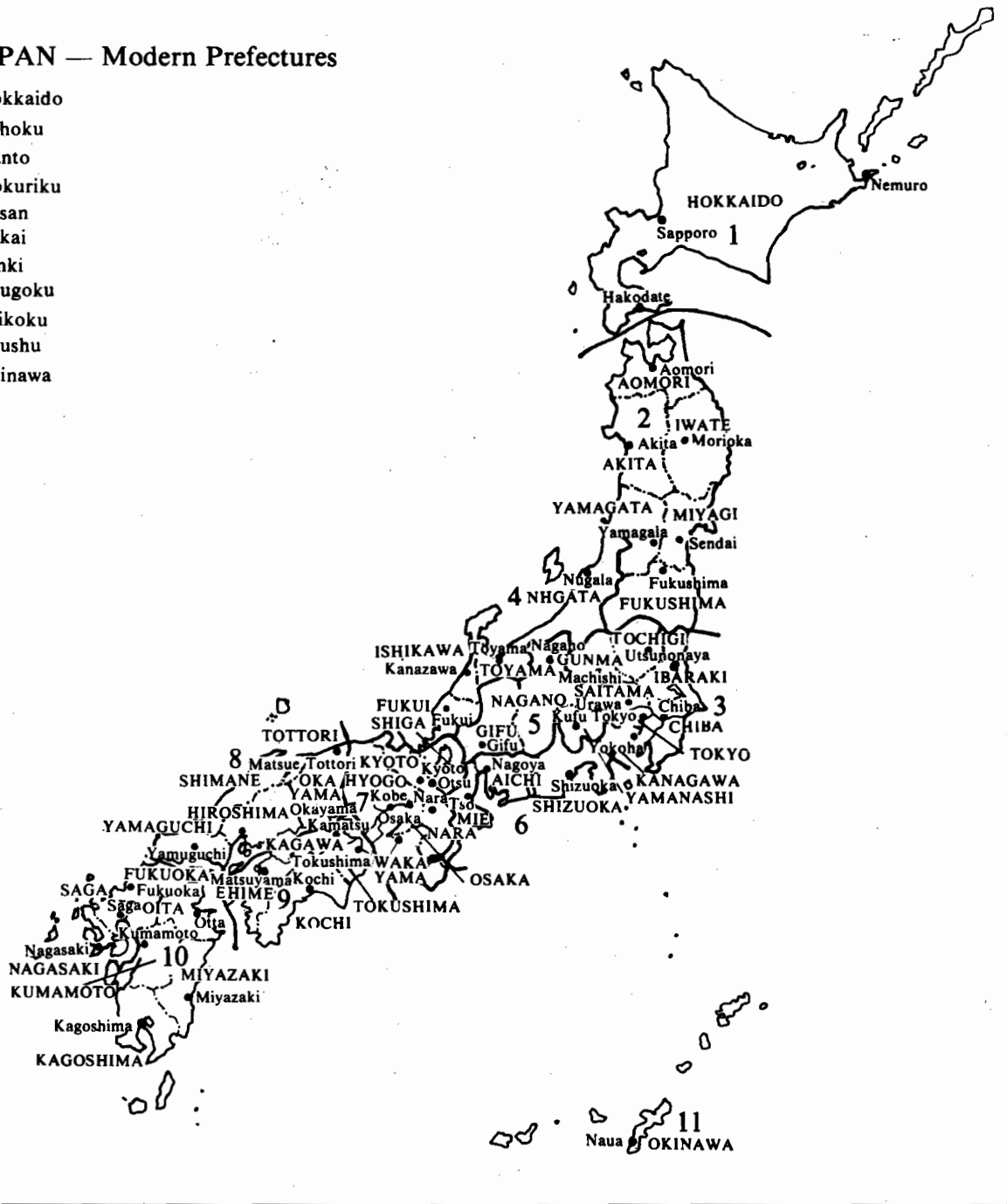
नक्शा-3 : आधुनिक जापान के प्रांत

3.2 तोकुगावा के आधिपत्य की स्थापना की पृष्ठभूमि

जापान को अक्सर एक शुरुआती सभ्यता कहा गया है, लेकिन यह धारणा सही नहीं है क्योंकि इसमें जापान में विकसित संस्कृति की मजबूती को नज़र अंदाज़ किया गया और कम करके आंका गया है। चीन के सांस्कृतिक प्रभाव में रहते हुए, जापान भौगोलिक रूप से कटा रहा। महाद्वीप से जापान के द्वीपों को अलग करने वाले इस सागर को पार करना कठिन था। इसका मतलब यह होता है कि चीनी प्रभाव जापान में कोरिया के रास्ते आया। इसका यह भी मतलब हुआ कि संपर्क सीमित और छिटपुट था। इस तरह, जापान के लिए चीन एक आदर्श था और वह वास्तविक चीनी रीतियों के बारे में सोचे बिना चीन से जो भी हासिल हुआ उसे स्वीकार और आत्मसात कर सकता था। नये चिंतन के प्रति अपने आपको तैयार रखने की इस योग्यता के कारण जापानी लोग बाद के उन वर्षों में एक लाभकारी स्थिति में रहे जब उनका सामना आधुनिक यूरोपीय शक्तियों से पड़ा।

चीनी प्रभाव के साथ केवल बौद्ध धर्म ही नहीं आया, बल्कि एक लिपि व्यवस्था भी आयी और एक एकीकृत राज्य का राजनीतिक और प्रशासनिक ढांचा भी आया। पितृसत्तात्मक इकाईयों में विकसित होने वाले और एक राजतंत्रीय राज्य का विकास करने वाले जापानी समाज ने राज्यतंत्र की नयी शक्तियों को समर्थन देने और निर्धारित करने के लिये इन संस्थाओं का उपयोग करने की जम कर कोशिश की।

ताहिना संहिता के नाम से एक कानूनी संहिता 701 ई. में बन कर तैयार हुई जिसमें देश का शासन चलाने के लिये कुछ दंड और प्रशासन संबंधी कानून रखे गये। देश को प्रांतों में बांटा गया और प्रत्येक प्रांत का शासन चलाने के लिये एक गवर्नर रखा गया। लेकिन, चीन के विपरीत, यहां धार्मिक रीतियों को परिषद् और तमाम पदों से ऊपर रखा गया।

इस काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना भूमि के निजी अधिकार का उन्मूलन व "महान परिवर्तन" या *ताईका* थी। इन सुधारों की प्रेरणा तो चीनियों से मिली, लेकिन इनमें संशोधन करके इन्हें जापानी स्थितियों के अनुकूल बना लिया गया था। ये सुधार कुछ हद तक सजावटी थे और राज्य निर्माण की वास्तविक शक्तियाँ विवादास्पद थीं। प्राचीन या क्लासिकल जापान का प्रतीक *हाईयान* (शांति और चैन) का वह दौर था जिसमें आज के क्योतो में राजधानी की स्थापना की गयी। उस समय हाईयान क्यो के नाम के जानी जाने वाली राजधानी की स्थापना चीनी तांग वंश की राजधानी चांग-आन के नमूने पर की गयी।

यह काल फ्यूजीवारा परिवार के सत्ता में आने के लिये उल्लेखनीय है। जापानी इतिहास की एक उल्लेखनीय और बार-बार पायी जाने वाली विशेषता है वैधता और सत्ता के बीच अलगाव। सम्राट वैध शासक बना रहा, लेकिन वास्तविक सत्ता फ्यूजीवारा-परिवार के हाथ में रही, इनमें सबसे शक्तिशाली था फ्यूजीवारा-नो-मिचिंगा (966-1028 ई.)।

हाईयान सभ्यता एक अभिजात्य संस्कृति थी जिसका निर्माण और निर्वाह कुछ हजार दरबारियों ने किया। दसवीं और ग्यारहवीं शताब्दी के दौरान इस संस्कृति ने एक अत्यधिक परिष्कृत और सुसंस्कृत सौंदर्यवादी दर्शन को जन्म दिया। लेकिन भौतिक जीवन अत्यधिक साधारण और संयमी था। उनका भोजन चावल, समुद्री शैवाल, मूली, फल और मेवा था। सब्जियाँ बहुत थोड़ी और मांस-मछली बहुत कम मात्रा में खाई जाती थी। चाय नवीं शताब्दी में चीन से आयी थी और उसका इस्तेमाल केवल दवाई के रूप मे किया जाता था। उनके यातायात का प्रमुख साधन बैलगाड़ी थी।

अभिजात वर्ग के हाथों से धीरे-धीरे सत्ता और राजस्व निकल कर सैनिक शासकों के उभरते हुए वर्ग के हाथों में आ गये। सैनिक भूस्वामी वर्ग ने नागरिक और सैनिक दोनों तरह के कार्यों पर अपने विशेषाधिकारों और अधिकारों को मजबूत कर लिया और शाही दरबार के पास केवल सत्ता की पदवी रहने दी। 1190 आते-आते, असली सत्ता शाही राजधानी क्योतो से निकल कर कामाकूरा पहुँच गयी। कामाकूरा बाकुफू का अर्थ होता है "तंबू सरकार" जिसका इस्तेमाल शुरू में रणक्षेत्र में सेना के मुख्यालय के लिये होता था। कामाकुरा बाकुफू ने सामंतवादी शासन के एक दौर की शुरुआत की और सामुराइ या योद्धा वर्ग को आगे किया।

कामाकुरा बाकुफू ने अपने क्षेत्रों के नियंत्रण के लिये जागीरदारों से काम लिया और प्रांतों का प्रशासन चलाने के लिये "शोगुन" या गवर्नर नियुक्त किये। सामुराइ शब्द का अर्थ होता है सेवा करना, और यह इस बात का संकेत देता है कि एक योद्धा के रूप में उसका कर्तव्य है अपने स्वामी की सेवा करना।

कामाकुरा के बाद अशीकागा (1333-1573) का दौर आया जिसमें सामंतवादी संस्थाओं का विकास हुआ। सेना ने जिस शाही दरबार को बेकार कर दिया था उसे शक्तिहीन और लगभग अस्तित्वहीन कर दिया गया। कई सम्राट तो इतने गरीब रहे कि उनकी उचित अंत्येष्टि या राजतिलक भी नहीं हो सका।

पंद्रहवीं शताब्दी के अंत से युद्ध अक्सर होते रहते थे और देश के युद्ध में लगे होने के इस अनिश्चित दौर (सैंगोकू) में कई किसानों ने अपनी रक्षा के लिये "इक्की" गिरोहों का गठन कर लिया ये गिरोह पैसा वसूलने और महाजनों पर हमला करने का काम करते थे। वे सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया का एक हिस्सा थे। अमिदा बौद्ध के इक्की पंथ जैसे धार्मिक पंथों ने भी इवीज़न और कागा (आज के फुकाई और इशीकावा) में अपना अधिकार बना लिया। दामियों के युद्ध नेताओं ने अपनी राजनीतिक और आर्थिक शक्ति को मजबूत करने का प्रयास किया।

युद्धों के बावजूद अर्थव्यवस्था का विकास हुआ और संस्थाओं में एक हद तक परिष्कार हुआ। सोलहवीं शताब्दी के मध्य दौर में जो राजनीतिक अराजकता फैली हुई थी उसमें सामंतवादी स्वामियों ने अपना अधिक ध्यान अपनी जायदाद को मजबूत करने और विरोधी गठबंधनों को रोकने में लगाया। एक दूसरे से जूझने वाले गिरोहों की इस अव्यवस्थिति स्थिति में तीन विभूतियाँ उभर कर आयीं जिन्होंने जापान को एकता के सूत्र में बाँधा—ओदा नोबुनागा (1543-82) तोयोतोमी हीदेयोशी (1537-98) और तोलीगावा एयासु (1543-1616) इन तीन बिल्कुल भिन्न चरित्र वाले व्यक्तियों ने एक दूसरे का अनुसरण किया और जापान को केवल राजनीतिक दृष्टि से ही एक नहीं किया बल्कि उसे आर्थिक और सामाजिक रूप से भी सुदृढ़ किया।

इन तीनों ने जिस एकता के लिये काम किया वह एक बुनियादी राजनीतिक इकाई के रूप में सामंती जागीर की सफलता का प्रतीक है। इस प्रक्रिया में ऊपर चर्चित इक्की या बौद्ध मठों जैसे दूसरे गुटों के लिये अपने आपको बनाये रखना और अपनी राजनीतिक शक्ति को संस्था का रूप देना असंभव हो गया।

ओदा नोबुनागा मध्य जापान के ओवारी के एक छोटे परिवार का था। चतुर गठबंधनों और सफल लड़ाइयों के जरिये उसने अपनी स्थिति मजबूत की और अपनी शक्ति को बढ़ाया। अक्टूबर 1571 में नोबुनागा ने हाइज़ने के बौद्ध मठ को नष्ट कर दिया यह बहुत बड़ा मठ था जिसमें बड़ी-बड़ी रियासतें और योद्धा थे। इसके नष्ट होने और तीन हजार से भी अधिक भिक्षुओं की हत्या होने से उनका राजनीतिक अधिकार हासिल करने की कोशिश का भी अंत हो गया।

ठीक इसी ढंग से नोबुनागा ने बौद्ध धर्म के जोदो शेंशू पंथ के हथियारबंद सदस्यों से भी लड़ाई लड़ी। "इक्को इक्की" कहलाने वाले ये बौद्ध ओसाका के इशियामा होंगांजी मंदिर के आसपास जमा थे। उसकी शक्ति की सर्वोच्चता का प्रतीक आजुची के भव्य मंदिर का निर्माण था। लेकिन उसके शत्रु फिर भी बने रहे और उसके ही एक सेनापति अकेची मिश्तशीदे ने उसकी हत्या कर दी।

अपनी मृत्यु के समय नोबुनागा का एक तिहाई जापान पर कब्जा था और उसने उभर रहे राजनीतिक ढांचे की आधारभूमि तैयार की। 1571 में उसने भूमि कर निर्धारण की एक नयी प्रणाली की शुरुआत की और 1576 में उसने किसानों को निरस्त्र करना शुरू कर दिया। लगातार कई सालों की लड़ाई के परिणामस्वरूप आम लोग हथियार रखने लगे थे। शाति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से न केवल किसानों को निरस्त्र किया ताकि वे खेती के अपने प्रारंभिक धंधे में लौट आयें बल्कि वह सामुराइ (योद्धाओं) को दुर्ग वाले उन कसबों में लेकर आया जो बाद में उभरते शहरों के केन्द्र बने। इस कदम से भूमि संपन्न सैनिक अभिजात वर्ग की स्वाधीन शक्ति को कम करने में म्दद मिली। नोबुनागा ने नाप-तौल की प्रणाली को भी एकरूपता देने की कोशिश की।

नोबुनागा के एक सफल सेनापति तोयोतोमी हिदेयोशी ने शिबाता कत्सुई जैसे दूसरे प्रतिद्वंदियों को हराया और 1585 में सम्राट से *कंपाकू* या रीजेंट की उपाधि ले ली। अलगे कुछ साल उसने दूसरे प्रतिद्वंद्वियों को ठिकाने लगाया और 1590 आते आते वह अपने प्रमुख प्रतिद्वंद्वियों को हरा चुका था।

हिदेयोशी बहुत नीचे से उठ कर देश का सबसे शक्तिशाली राजनीतिज्ञ बना। उसकी नीतियों ने नोबुनागा की बनायी लीक को विकसित किया। 1588 में उसने किसान को सिपाही से अलग करने के लिये एक क्रूर मुहिम चलायी। 1590 में एक भूमि सर्वेक्षण किया गया जिसमें स्वतंत्र खेतिहर के नाम भूमि को दर्ज किया गया। यह निश्चित किया गया कि कर निर्धारण का आधार उत्पादन होगा लेकिन उसे पूरे गाँव पर इकाई के रूप में लगाया जायेगा। सारे मालिकाना अधिकार दाइम्यो या सामंतों के पास थे। हिदेयोशी ने 1592 में कोरिया पर आक्रमण का एक असफल प्रयास किया। इसकी असफलता का कारण कोरिया और चीन के

छापामारों का विरोध था। असफलता का आंशिक कारण यह भी था कि हिदेयोशी नौसेना की ताकत के महत्त्व को नहीं समझ पाया। फिर भी, जापान के लिये एक महत्त्वपूर्ण लाभ कोरियाई दस्तकारों, विशेषतौर पर कुम्हारों का आना रहा जो क्यूशू के क्षेत्रों में बस गये।

हिदेयोशी एक शक्तिशाली व्यक्ति था और सत्ता हथियाने और उसके इस्तेमाल करने के मामले में निपुण था। बहरहाल, वह दिखावा करने वाला और अशिष्ट था और अपने जीवन के अंतिम वर्षों में मानसिक रूप से अस्थिर रहा। हिदेयोशी के मरने के समय तोकुगावा इयेसा सबसे मजबूत दाइम्यो था जिसके पास किसी भी दाइम्यो से दो गुना संपत्ति (23 लाख कोकू) थी।

तोकुगावा इयेसा नोबुनागा के समय से ही पूर्वी जापान में शक्तिशाली रहा और हिदयोशी के साथ उसके संबंध बनते-बिगड़ते रहे थे, लेकिन दोनों ही इस बात को महसूस करते थे कि टकराव उनके हित में नहीं होगा। दूसरे दाइम्यो की मदद से उसने सेकीगाहा के मैदान में अपने विरोधियों को हराकर 20 अक्टूबर 1600 को अपना आधिपत्य स्थापित किया। 1603 में तोकुगावा इयेसा को "शोगुन" या गवर्नर बना दिया गया और उसका अधिकार पक्का हो गया।

इयेसा समर्थ शासक था और उसने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा बनाये गये आधार पर भूमि पर तोकुगावा गवर्नरी का एक विशाल महल खड़ा किया। उसने अपने राजनीतिक कौशल का परिचय एक ऐसी पूर्ण व्यवस्था बनाने में दिया जिसमें यह सुनिश्चित हो गया कि कोई भी प्रतिद्वंद्वी शक्ति तोकुगावा की सर्वोच्चता को चुनौती नहीं दे सकती।

3.3 तोकुगावा राज्य

इस भाग में राजनीतिक नियंत्रण के रचनातंत्र का अध्ययन किया जायेगा। यहाँ राजनीतिक नियंत्रण की एक पद्धति के रूप में दाइम्यो के कार्यकलाप और संस्था की भी परख की जायेगी।

3.3.1 राजनीतिक नियंत्रण का रचनातंत्र

तोकुगावा इयेसा ने जो व्यवस्था लागू की उसे *'बाकु-हान'* व्यवस्था कहा जाता है। इसका संबंध *''बाकुफू''* या केन्द्रीय सरकार और *''हान''* या सामंती जागीर से है। इस राजनीतिक ढांचे में एक ऐसी व्यवस्था को कायम किया गया जो तोकुगावा की केन्द्रीय सरकार और अर्ध-स्वायत्तशासी सामंती जागीरों के बीच संतुलन पर निर्भर थी।

सिद्धांत रूप में इयेसा को **"सेई-ताई-शोगुन"** (बर्बर दमनकारी सेनापति) की उपाधि दी गयी थी। यह एक सैनिक उपाधि थी जिसकी शुरुआत कामाकुरा गवर्नरी के समय से हुई । वास्तव में क्योटो में रहने वाले सम्राट को सत्ता और अधिकारों से बिल्कुल वंचित रखा गया था। शासक की पदवी के साथ कोई अधिकारी नहीं जुड़ा था, बल्कि इससे सम्राट की शक्ति को प्रतीक के रूप में बनाये रखा गया था। यह उपाधि आने वाले सभी तोकुगावा शासकों के पास रही और इसके साथ जापान को शांत रखने का कर्तव्य जुड़ा था। व्यापक अर्थों में इस प्रक्रिया में विदेशियों के साथ संपर्क पर प्रतिबंध शामिल था। यह सामाजिक व्यवस्था के आधार में भी उपस्थित था जिसमें सिद्धांत रूप में सामाजिक गतिशीलता पर प्रतिबंध था और सुपरिचित **''शी-नो-को-शो''** (सामुराइ, किसानों, दस्तकारों और व्यापारियों की) व्यवस्था में सामाजिक संबंधों को निष्क्रिय किया हुआ था।

तोकुगावा की व्यवस्था के मुख्य सिद्धान्तों को 1615 में दो निर्देश सूचियों में व्यक्त किया गया था :

1) पहली सूची में 17 धाराएं थीं, इसमें यह स्पष्ट निर्देश था कि सम्राट और उसका दरबार अपने आपको शैक्षिक और सांस्कृतिक मामलों तक सीमित रखेंगे। गवर्नर ने वरिष्ठ दरबारी अधिकारियों को नियुक्त करने के अपने अधिकार को पक्का किया।

2) दूसरी सूची में 13 धाराएँ थीं, इसमें सामंतों की शक्तियों या अधिकारों पर कड़े प्रतिबंध लगाये गये। वे सैनिक गवर्नर की सहमति के बिना न तो विवाह संबंध बना सकते थे न ही किलेबंदी कर सकते थे, या उनकी मरम्मत कर सकते थे। उन्हें दूसरी जागीरों के भगोड़ों को शरण देने की भी मनाही थी।

इन निर्देशों से साफ पता चलता है कि तोकुगावा गवर्नरी नियंत्रण की एक समान व्यवस्था बना रही थी।

Sea of Japan
UESUGI
U
H
HOJO
S
TAKEDA
IMAGI
H
MORI
SOGABE
OTOMO
SHIMAZU

नक्शा-4 : दाइम्यो क्षेत्र
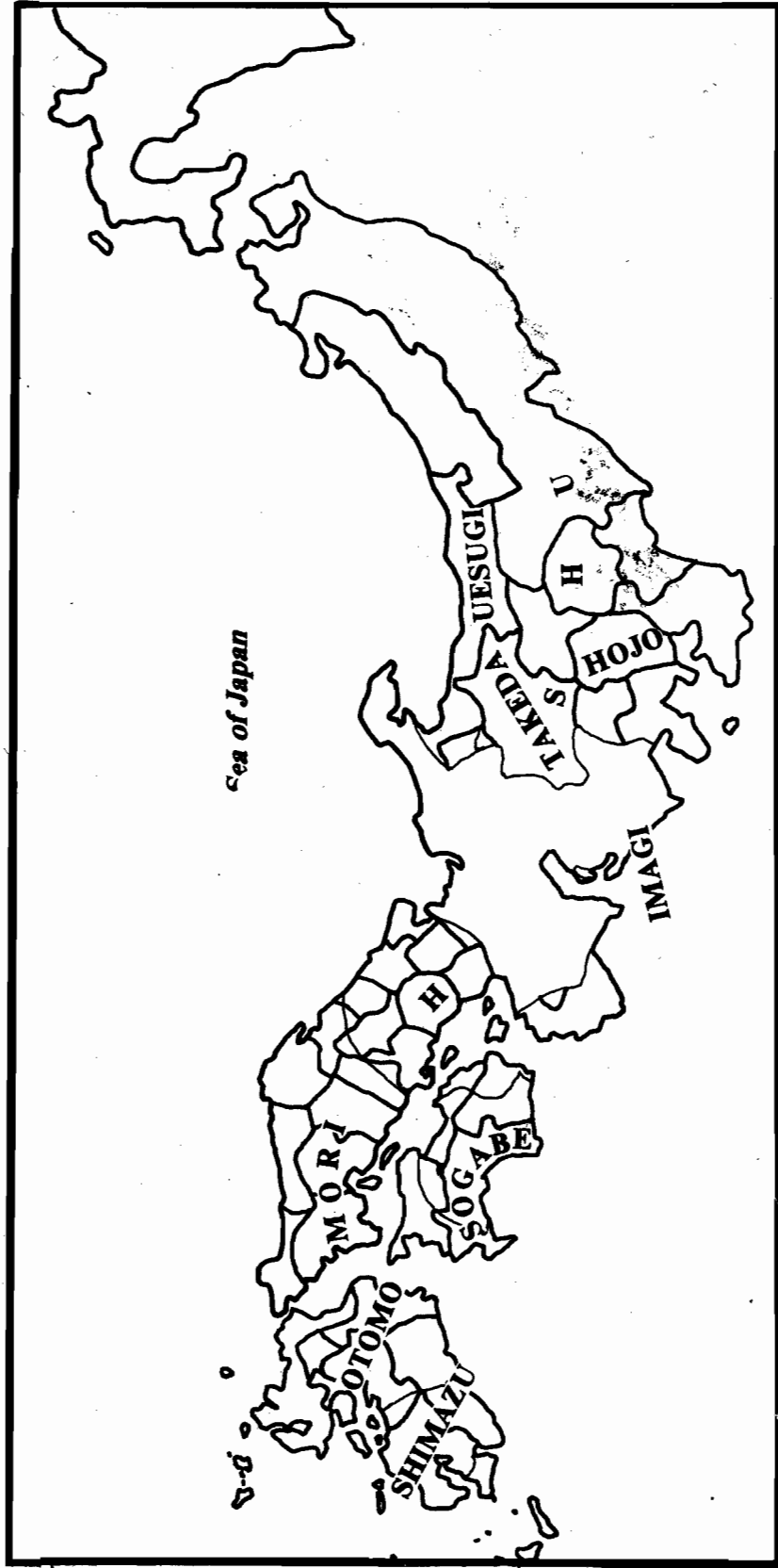
3.3.2 दाइम्यो

दाइम्यो या सामंत सरदारों को जे. डब्ल्यू. हाल ने "प्रारम्भिक आधुनिक दाइम्यो" के वर्ग में रखा है क्योंकि इन सामंतों के पास विस्तृत सरकारी ढांचे थे जिन्हें कन्फ्यूशियस के सिद्धान्तों ने औचित्य प्रदान किया हुआ था और जिनका पोषण बाकुफू की शाति और स्थिरता की गारंटी या सुनिश्चितता ने किया था।

राजनीतिक नियंत्रण का सबसे महत्त्वपूर्ण तरीका था "दाइम्यो" को दो प्रमुख श्रेणियों में बांटना :

- एक, *फुदाई*—जो लोग तोकुगावा के संबंधी थे या लगातार उसके प्रति वफादार रहे, और
- दो, *"तोज़ामा"* या बाहरी "दाइम्यो"—वे लोग जो युद्ध में पराजित रहे।

फुदाई दाइम्यो को महत्त्वपूर्ण ठिकाने वाली ज़मीनें दी गयीं और तोकुगावा परिवार की ज़मीनों के साथ मिलकर ये *तोज़ामा* दाइम्यो की ज़मीनों से ज्यादा थीं। दूसरी ओर, *तोज़ामा* को उनके प्रांत बदलने का आदेश दिया गया, उनकी कई जागीरों को जब्त कर लिया गया और सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें तोकुगावा सरकार में किसी भी पद से बाहर रखा गया।

दाइम्यो तोकुगावा के प्रति वफादारी के लिये शपथबद्ध थे, लेकिन 1600-1650 के बीच के प्रारम्भिक सालों में कई जमींदारियां हस्तांतरित की गयीं और इस बात पर जोर दिया गया कि ये जमीनें गवर्नर की खुशी से उनके पास थीं। इस तरह, सेवाओं के लिये पुरस्कृत किये जाने पर 172 नये दाइम्यो बनाये गये और 281 बार दाइम्यो का तबादला किया गया। इस तबादले की नीति ने दाइम्यो और प्रांत की जनता के बीच के संबंधों को कमजोर किया। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान दो सौ से भी अधिक दाइम्यो की कुछ या सारी जमीन उनके अपराधों के कारण उनसे ले ली गयी।

तोकुगावा की ताकत का केन्द्र इसके 60,000 हथियारबंद मातहतों की हथियारबंद शक्ति थी। उन्हें ध्वजाधारी और नौकर की श्रेणियों में रखा गया था। ये प्रत्यक्ष नौकर थे और सैनिक सेवा के लिये भी उत्तरदायी थे। लेकिन इस ताकत को बढ़ा-चढ़ा कर बताने की आवश्यकता नहीं क्योंकि और तमाम दाइम्यो ने 200,000 से भी अधिक सामुराइ नियुक्त कर रखे थे। इसलिये तोकुगावा की व्यवस्था अपनी स्थिरता के लिये इस बात पर निर्भर थी कि वह यह सुनिश्चित करे कि इसके शासन के विरुद्ध कोई बड़ा विरोधी गुट न बन पाये।

प्रतिबंधों और संतुलनों की इस व्यवस्था में एक प्रशासनिक तंत्र शामिल था जिसमें उन लोगों को बाहर रखा गया था जिनके पास ताकत की वैधता थी। इसमें बंधकों की व्यवस्था भी शामिल थी जिन्हें वैकल्पिक सेवा या **"संकिन कोताई"** के नाम से जाना जाता था।

इस प्रशासनिक तंत्र को विकसित होने में समय लगा। पहले पचास वर्षों में सैनिक गवर्नरों ने सत्ता का इस्तेमाल खुद किया, लेकिन धीरे-धीरे 1666 से यह सत्ता प्रशासनिक प्रमुखों के पास चली गयी—पहले महाप्रबन्धक के पास, और फिर मुख्य पार्षदों के पास। ये अधिकारी मध्यम और छोटी जागीरदारी के शासकों में से थे जबकि बड़े जागीरदारों को पदों से बाहर रखा गया। जो घराने तोकुगावा घराने को वारिस दे सकते थे उन्हें भी पदों से बाहर रखा गया। अधिकारियों की नियुक्ति एक ही समय पर होती थी और उन्हें बारी-बारी से भी काम दिये जाते थे। सभी नीतिगत मामलों में सलाह ली जाती थी और उनके लिये संयुक्त सहमति आवश्यक होती थी।

तोकुगावा घराने का अपनी जमीनों पर सीधा अधिकार था जो दस लाख कोकू से अधिक थी, और उसका कब्जा औसाका और नागासाकी जैसे बड़े शहरों पर और तांबे और चांदी की खानों पर भी था। उन्होंने निरीक्षकों (मेत्सुके) को नियुक्त किया हुआ था जो दाइम्यो पर गुप्त रूप से नजर रखते थे और उनकी गतिविधियों की खबर देते थे।

वैकल्पिक सेवा व्यवस्था को 1635 में इमित्सू ने औपचारिक रूप दिया, जो तीसरा सैनिक गवर्नर था। इस व्यवस्था के तहत दाइम्यो के लिये कुछ अवधि तक राजधानी इदो (आज का टोक्यो) में रहना आवश्यक था। जब दाइम्यो राजधानी से दूर या बाहर रहते थे उस दौरान उन्हें अपने परिवार को बंधक के रूप में छोड़ना होता था जिससे सैनिक गवर्नर के प्रति उनकी वफादारी सुनिश्चित हो । जब दाइम्यो इदो की यात्रा करते थे तो उन्हें 150 से 300 के बीच सेवकों का एक दल साथ रखना होता था और उन्हें पहले से निर्धारित मार्ग से जाना होता था। इन यात्राओं और इदो में उनके ठिकानों पर होने वाले खर्चों से उनका धन चुक जाता था और उनकी शक्ति पर यह प्रतिबंध का काम भी करता था।

प्रशासन की तोकुगावा व्यवस्था एक स्तर पर तो एक राष्ट्रीय सरकार थी और दूसरे स्तर पर एक बड़ी दाइम्यो सरकार। सबसे ऊपर गवर्नर दोनों ही कामों का निरीक्षण रखता था। सिद्धांत रूप में तो यह व्यव... सीधी दिखायी देती है, लेकिन व्यवहार में यह इतनी सरल नहीं थी। कभी-कभी बारी-बारी से काम बदल कर देने जैसे सैद्धान्तिक प्रतिबंधों को नहीं माना जाता था, और तामुना ओकित्स्वगु (1719-88) या मात्सनदाइरा सदानोबा (1758-1829) जैसे व्यक्ति बहुत शक्ति और प्रभाव बनाने में सफल रहे।

3.3.3 तोकुगावा राज्य की प्रकृति

राजनीतिक ढांचा एक केन्द्रीकृत राज्य था जिसमें दाइम्यो पर तोकुगावा को बहुत अधिकार प्राप्त थे। दाइम्यो तो अपने-अपने क्षेत्रों में प्रशासनिक कामों पर अपना अधिकार रखते थे लेकिन अन्ततः वे सैनिक गवर्नर के प्रति उत्तरदायी थे और उनका पद उसकी समझ या इच्छा पर निर्भर था। तोकुगावा की सत्ता के तहत इस राजनीतिक एकीकरण की अपनी व्यावहारिक सीमाएं थीं।

गवर्नर ने कभी अपनी शक्ति का इस्तेमाल अठारहवीं शताब्दी और उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में सामंती जागीरों को जब्त करने या उन्हें फिर से वितरित करने में नहीं किया, और जब कभी इसकी कोशिशें हुई तो उनका प्रतिरोध हुआ। फिर भी, तोकुगावा के प्रशासनिक ढांचे का विदेशी-संबंध, तट रक्षा और प्रमुख शहरी केन्द्रों और सोने-चाँदी के स्रोतों पर नियंत्रण रहा। इस व्यवस्था ने शांति और स्थिरता के ढाई सौ वर्ष दिये।

बोध प्रश्न 1

1) निम्न वक्तव्य सही (√) है या गलत (×)? निशान लगाइये।

   i) जापानी इतिहास का पूर्व-आधुनिक काल, जिसके दौरान तोकुगावा परिवार सत्ता में रहा, राजनीतिक स्थिरता का दौर था।

   ii) जापान चीन के सांस्कृतिक प्रभाव में था।

   iii) कामाकुरा घराने के बाद फ्यूजीवारा परिवार आया।

   iv) तोकुगावा के प्रशासनिक ढांचे का विदेशी संबंधों, तट रक्षा आदि जैसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों पर नियंत्रण था।

2) लगभग 15 पंक्तियों में "दाइम्यो" की और उनके कार्यों की व्याख्या करें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

3) लगभग पांच पंक्तियों में तोकुगावा राज्य की प्रकृति के विषय में बतायें।

....

....

....

....

....

3.4 तोकुगावा का सामाजिक ढांचा

तोकुगावा समाज स्तर के समूहों में बंटा हुआ था, और इन समूहों में एक स्थिति से दूसरी में जाना सिद्धान्त रूप से असंभव था। फिर भी, व्यवहार में, आर्थिक विकास के कारण लोग अपना सामाजिक स्तर बदल लेते थे।

3.4.1 सम्राट और अभिजात तंत्र

क्योटो स्थित सम्राट के पास कोई अधिकार तंत्र नहीं था। वह एक छोटी और अलग-थलग दरबारी संस्कृति का केन्द्र था। सम्राट के पास अधिकार तो थे नहीं, इनकी भरपाई उसकी व्यापक वंशावली में होती थी। 137 अभिजात्य परिवार थे जिनमें से अधिकांश पांच मध्यकालीन वंशावलियों का होने का दावा करते थे। उनकी एक बड़ी संख्या फ्यूजीवारा परिवार का वंशज होने का दावा करती थी। फ्यूजीवारा परिवार प्राचीन जापान में शक्तिशाली रहा था।

इन अभिजात्यों की आमदनी तोकुगावा के छोटे मातहतों के समान थी और उन्हें अपनी इस कम आमदनी को पूरा करने के लिये पढ़ाने का काम करना पड़ता था। वे अक्सर कलाओं में कुशल होते थे। कई अभिजात्य लोग बौद्ध पुरोहित बन गये और उन्होंने बौद्ध व्यवस्था में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी । तोकुगावा घराना सम्राट और दरबार से अलग ही रहा, हालांकि इयेसा ने अपनी बेटी की शादी तत्कालीन सम्राट गो-मिजुनू से की थी।

3.4.2 सामुराइ

सामाजिक श्रेणीबद्धता की सबसे ऊंची पायदान पर योद्धा वर्ग के लोग थे और इस काल में उनकी संख्या ढाई करोड़ की कुल आबादी में 20 लाख थी। यह शासक वर्ग के लिये बड़ी संख्या थी। उनका काम था अपने स्वामियों की सेवा करना। और वफादारी को उनका सबसे बड़ा गुण माना जाता था।

आंतरिक तौर पर सामुराइ दो बुनियादी समूहों में बटे थे—*"शी"* और *"सोत्सू"*। *"शी"* या उच्चतर सामुराइ ऊंचे शासक अधिकारी और वास्तविक अभिजात वर्ग के लोग थे, जबकि *"सोत्सू"* या ग्रामीण मातहत (या मातहत) निचले पदों पर काम करते थे। इन दोनों वर्गों के बीच शादी बहुत कठिन बात थी।

सामुराइ की आमदनी 200 कोकू से 10,000 कोकू तक हो सकती थी, और इस दौर की वित्तीय समस्याओं के कारण उनकी वास्तविक आमदनी घट रही थी और उनमें से कुछ ने अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के उद्देश्य से व्यापारी परिवारों में शादियां कर लीं।

शांति और स्थिरता के इस काल में *"बाशिदो"* (योद्धा का मार्ग) के नाम से जानी जाने वाली आचार संहिता का विकास किया गया। इसका सार यह था कि एक सामुराइ को हर समय अपने स्वामी के लिये अपनी जान देने को तैयार रहना चाहिये। 1663 तक यह स्थिति थी कि कई सामुराइ अपने स्वामी की मृत्यु के बाद आत्महत्या (जुंशी) कर लेते थे। बाद में इस प्रथा को रोका गया। पैसों और काम की कमी से परेशान कई सामुराइ अक्सर बैर निकालने पर तुल जाते थे, जो लोकप्रिय नाटक का विषय बन गया। जिन सामुराईयों का कोई स्वामी नहीं था उन्हें "रोनिन" (स्वामीविहीन सामुराइ) कहा जाता था। ये बेरोजगार आदमी समाज के लिए एक समस्या बन गये और 1651 में उनमें से कुछ ने तो विद्रोह भी कर दिया।

सामुराइ की आमदनी का स्रोत ज़मीन थी लेकिन ज़मीन पर उनका कोई कब्जा नहीं था। वास्तव में उन्हें दाइम्यो या सैनिक गवर्नर की ओर से वजीफा मिलता था और जब उनके पास कोई पद होता था तो उन्हें उस पद से जुड़ा वजीफा भी मिलता था। इसके बदले में उनसे आशा की जाती थी कि वे अपनी हैसियत के हिसाब से एक नौकर दल बनाकर रखेंगे। अत्यधिक साक्षरता होने और भौतिक साहित्यिक कलाओं को बढ़ावा मिलने के कारण, वे सरकारी अधिकारी हो गये।

3.4.3 किसान, दस्तकार और व्यापारी

आबादी का एक बड़ा हिस्सा खेती में लगा था और इससे मिलने वाले राजस्व से *"बाकुफू"* का पोषण होता था। गांवों में एक हद तक स्वशासन था जिससे उनमें सहकारी काम को सुदृढ़ता मिलती थी। उनका जीवन कठिन था और वे ज्वार-बाजरा और कूटू और सब्जियों और *"मीसो"* (सोयाबीन से बना मिश्रण) खा कर गुजारा करते थे। प्राकृतिक विपदाओं और अकाल में उनकी जानें चली जाती थीं।

शांति और स्थिरता के कारण अर्थव्यवस्था का व्यापारीकरण बढ़ा और किसानों की हालत में सुधार हुआ। कइयों ने बाजार के लिये उत्पादन शुरू कर दिया, और करों के न बढ़ने के कारण वे अपनी कमाई को *"साके"* (चावल की शराब), सोया की चटनी बनाने या रेशम का उत्पादन करने में लगा सकते थे। वे महाजनों के रूप में भी उभरे। जमीन तो नहीं बेची जा सकती थी, फिर भी काश्तकारी में बढ़ोतरी हुई और शहरी क्षेत्रों की ओर जाने की स्थिति भी बढ़ी।

शहरी केन्द्रों का बढ़ना तोकुगावा की अर्थव्यवस्था के गतिशील होने का संकेत देता है। 18वीं शताब्दी का अंत होते-होते राजधानी इदो की आबादी लगभग दस लाख हो गयी थी। अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये, दस्तकार और दूकानदार यहाँ आकर और ओसाका, क्योतो जैसे दूसरे शहरों या कनाज़वा सेंदाई कगोशिनों जैसे दुर्ग कसबों में जाकर बस गये जिनकी आबादी 50,000 से भी ऊपर थी। तोकाइद्स (पूर्वी समुद्री सड़क), नाकासेंदो (पर्वत के मध्य की सड़क), सान्योदो (पर्वतों की धूप वाली तरफ की सड़क) और सनिंदो (पर्वत की छांव वाली तरफ की सड़क) जैसी सड़कों के बनने से व्यापार में बेहतरी आयी।

उभरने वाली शहरी संस्कृति बुनियादी तौर पर व्यापारियों के नेतृत्व वाला आंदोलन था। व्यापारियों (*शोनिन*) को वैसे तो दूसरों पर निर्भर करने वाले या परजीवियों के रूप में नीची निगाह से देखा जाता था, लेकिन वे ही जापान के पहले उद्यमी थे। वे कठिन परिश्रम करते थे और उन्होंने एक जीवंत सामाजिक व्यवस्था को विकसित करने में योगदान दिया। उदाहरण के तौर पर, 1627 में, एक मित्सुई तोशित्सूगा ने इचीगाया के नाम से इदो में एक वस्त्र की दुकान खोली जो बढ़ते-बढ़ते आज मित्सुकाशी के नाम से मित्सुई कंपनी की है।

तोकुगावा घराने ने कुछ व्यापारियों को संरक्षण दिया जिन्हें चावल की खरीद-फरोख्त, मुद्रा विनिमय और इससे संबंधित गतिविधियों पर एकाधिकार दे दिया गया। ओसाका व्यापारिक गतिविधियों का केन्द्र था और इन व्यापारियों ने बड़े-बड़े मकान बना लिये और पैसा इकट्ठा कर लिया। धीरे-धीरे वास्तविक गतिशीलता छोटे कसबों और बाद में गांवों की ओर बढ़ी जिनके पास एकाधिकार वाला विशेष अधिकार नहीं रहा।

तोकुगावा के दर्शन का आधार यह विचार था कि पैसा खेती से आता है, और उसमें आमदनी के इस नये स्रोत को नहीं पकड़ा। बल्कि कई मौकों पर तो व्यापारियों के लिए आदेश पत्र जारी किए गए कि वे अपने धन का प्रदर्शन न करें, या उनसे जबरन ऋण लेने के लिए आदेशपत्र जारी किए गए। व्यापारी वर्ग भिन्नता से मुक्त नहीं था लेकिन *बाकुफू* के तहत इसे जो विशेष अधिकार मिले हुए थे उससे इनमें आपस में ही वर्गीकरण हो गया था। उनकी जिम्मेदारी थी संस्थाएं बनाना और कौशल हासिल करना जिससे जापान के लिये अपने आपको एक आधुनिक राष्ट्र बनाना संभव हुआ।

3.5 तोकुगावा काल : एक मूल्यांकन

ढाई सौ साल तक जापान तोकुगावा परिवार के अधीन विदेशी संपर्क में रहकर भी सीमित विकास करता रहा। पश्चिमी शक्तियों को बाहर ही रखा गया और केवल उच्च लोगों को सीमित संपर्क की छूट थी। कोरिया और चीन के साथ राजनीतिक संबंध बना कर रखे गये और इन देशों के साथ थोड़ा-थोड़ा व्यापार भी चलता रहा। आंतरिक तौर पर, जापान 344 हान या जागीरदारियों में बंटा था जिनके पास कुछ अंश तक स्वायत्तता थी। मुद्राओं की संख्या अविश्वसनीय तौर पर बड़ी थी और बोलियां भी एक दूसरे से बहुत भिन्न थीं। सामाजिक वर्ग निर्धारित थे और उनके बीच स्वतंत्र गतिशीलता पर प्रतिबंध था। यह कई तरीकों से दीवारों से घिरा संसार था। ये प्रतिबंध आंशिक तौर पर उल्लेखनीय रूप से लंबे तोकुगावा शासन के लिये जिम्मेदार थे।

लेकिन, यह गलत ही होगा कि केवल निरंतरता को देखा जाये और बदलाव और विकास के चिन्हों को अनदेखा कर दिया जाये। शांति के कारण व्यापार और वाणिज्य का जापान के अन्दर प्रसार हो सका और इससे राष्ट्रीय बाजार बनने में मदद मिली जिसने *"हान"* के बीच के संपर्क सूत्रों को बढ़ा दिया। व्यवहार में

"हान" के बीच गतिशीलता बार-बार दिखायी देती है, और विचारों और व्यक्तियों दोनों ने ही *"हान"* की सीमाओं को पार किया। समाज में होने वाले इन बदलावों और नयी स्थितियों के प्रति अपने को अनुकूल बनाने की राजनीतिक ढांचे की असमर्थता ने ऐसे विचारों और दर्शनों को जन्म दिया जिन्होंने तोकुगावा घराने के प्रभुत्व की जड़ें काटने की बुनियाद रखी।

इस काल का कोई समग्र मूल्यांकन कर पाना कठिन काम है। फिर भी हमें इस सवाल पर विचार करना होगा कि यह व्यवस्था कड़ी निगरानी और भारी दमन के कारण इतने दिन चल गयी या सरकारी हस्तक्षेप की कमी के कारण। उदाहरण के तौर पर, अलग रहना इसलिये कारगर नहीं हुआ कि तोकुगावा ने अपने आपको दुनिया से काटकर रखा, बल्कि इसलिये कि दुनिया खुद जापान की तरफ से उदासीन रही। इसी तरह कसबे और गांव भी *बाकुफू* के अधिक हस्तक्षेप के बिना अपनी व्यवस्था चलाते रहे।

फिर भी, इस काल में आधुनिक जापान के विकास की बुनियाद रखी गयी क्योंकि कौशलों और संस्थाओं ने लोगों में यह सामर्थ्य बढ़ायी कि वे नये विचारों को स्वीकार करें और उन्हें मिलने वाले अवसरों का उपयोग कर सकें।

बोध प्रश्न 1

1) लगभग 15 पंक्तियों में जापानी इतिहास में सामुराइ की भूमिका और स्थिति के विषय में बतायें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) तोकुगावा काल में मुख्य व्यवसाय क्या थे? लगभग 10 पंक्तियों में जवाब दें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

:) व्यापारिक गतिविधियों के संदर्भ में व्यापारियों की भूमिका क्या थी? लगभग 5 पंक्तियों में बतायें।

....

....

....

....

....

3.6 सारांश

इस इकाई में आपका परिचय उस घटनाक्रम से कराया गया है जिसके द्वारा जापान में तोकुगावा शासन स्थापित हुआ। इस प्रक्रिया में तोकुगावा हिदेयोशी और इयासू ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। तोकुगावा राज्य ने राजनीतिक नियंत्रण को बकू-हान व्यवस्था पर आधारित किया। सामंतों की शक्ति पर काबू पाने के लिये निर्देश सूचियों पर आधारित एक कुशल व्यवस्था को लागू किया गया।

तोकुगावा राज्य की सामाजिक संरचना कुलीन, सामुराइ, किसान, दस्तकार तथा व्यापारी वर्गों पर आधारित थी। व्यापार और शहरीकरण में काफी वृद्धि हुई। विदेशों से संपर्क लगभग नहीं के बराबर था। लेकिन तोकुगावा शासन काल की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसने आधुनिक जापान के लिये आधारशिला तैयार की।

3.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) i) √ ii) √ iii) × iv) √

2) अपना उत्तर उपभाग 3.3.2 के आधार पर लिखें।

3) देखें उपभाग 3.3.3

बोध प्रश्न 2

1) देखें उपभाग 3.4.2

2) देखें भाग 3.4

3) देखें उपभाग 3.4.3